सैय्येदुस सादात कुत्बुल मदार

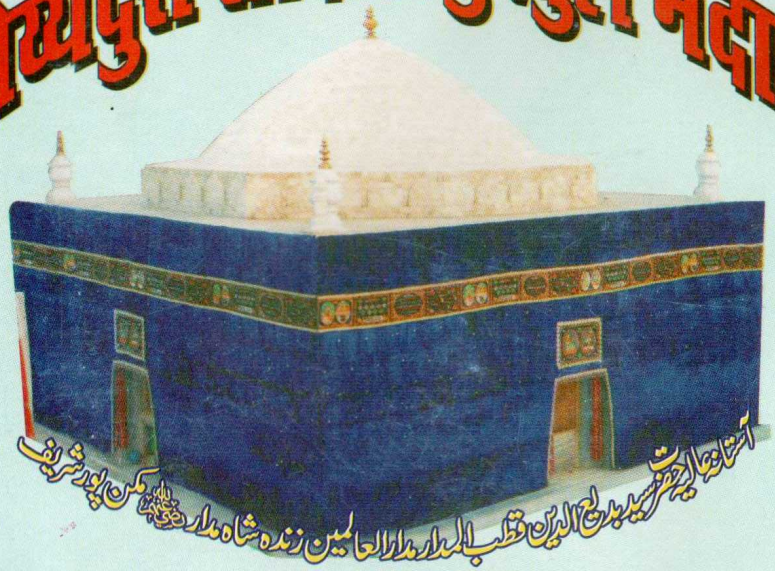

मौल्लिफ व शाएकर्दा

मुफ्ती सैय्यद शजर अली वक़ारी मदारी

मकानपुर शरीफ़ कानपुर नगर

بسم الله الرحمن الرحيم

दम मदार बेड़ा पार

सैय्येदुस सादात

कुतुबुल मदार

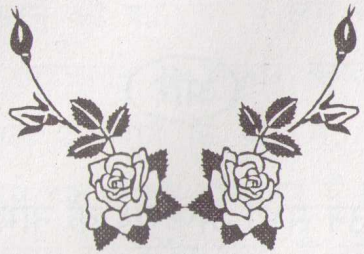

मुअल्लिफ़ व नाशिर

मुफ़्ती सैय्यद शजर अली वक़ारी मदारी

मकनपुर शरीफ, कानपुर नगर (उ०प्र०)

कीमत 35 रु0

इन्तिसाब

हज़रत सय्यद अमीर हसन साहब फ़नसूरी

और

उन सभी अफ़राद के नाम
जिन्होंने क़लम व क़िरतास से
मदारियत की तहक़ीक़ का काम किया

अर्ज़े मुअल्लिफ़

रसूल की उम्मत के हर फर्द को आले रसूल से इस वास्ते मुहब्बत रखना चाहिए कि वह नबी की आल हैं। अली, फातमा का खून हैं। कुछ उमरा अपनी ज़अमे अमीरी में सादात की अज़मतो शान को तहो बाला करने की कोशिश में लगे रहे, उन की हकीकत को पहचानने से इन्कार करते रहे, जैसे सय्यदना ज़ैनुल आबेदीन के दौर में: एक अमीर मक्का अय्यामे हज में इस इन्तिजार में खड़ा है कि लोग संगे अस्वद का रस्ता छोड़ दें और वह संग अस्वद का बोसा लेले मगर इस्लाम में कोई बड़ा और छोटा नहीं, हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, अवाम संगे अस्वद को चूमती रही और अमीर मक्का इन्तिजार करता रहा ।

तभी एक शोर बुलन्द होता है कि इब्ने रसूल हजरत ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस सलाम तशरीफ ला रहे हैं ।उम्मते रसूल यह सुन कर आले रसूल के लिए संगे अस्वद का रस्ता छोड़ देती है और हजरत ज़ैनुल आबिदीन बढ़ कर संगे अस्वद का बोसा ले लेते हैं ।

अमीर मक्का जो बड़ी देर से संगे अस्वद के बोसे के इन्तिजार में खड़ा था उस को यह सब पसंद नहीं आता । वह जानता था कि यह इब्ने रसूल हज़रत ज़ैनुल आबिदीन शहीदे कर्बला के जिगर पारे हैं फिर भी उस ने हेक़ारत भरे लहजे में कहा, यह कौन आदमी है ? और यह कह कर जताना चाहता था कि वह इमाम हुसैन के बेटे को पहचानता ही नहीं ।एक आशिके अहले बैत शाएर जिस का नाम जरीर था यह सुन कर उसे बड़ी ठेस लगी कि उसने खूने रसूल को पहचानने से इनकार कर दिया । जरीर के दिल का दर्द अशआर की शक्ल इख्तियार कर लेता है और उस की ज़बान से यूं निकलता है:

وَلَيْسَ قَوْلُكَ مَنْ هٰذَا الزَّائِرِهِ
اَلْعَرَبُ تَعْرِفُ مَنْ اَنْكَرْتَ وَالْعَجَمُ

اِنَّهُ خَيْرُ عِبَادِ اللهِ كُلِّهِمُوْا
اِنَّهُ التَّقِيُّ الطَّاهِرُ وَالْعَلَمُ

هٰذَا ابْنُ فَاطِمَهَ اِنْ كُنْتَ جَاهِلَهُ
وَبِجَدِّهٖ اَنْبِيَاءُ اللهِ قَدْ خُتِمُوا

ऐ अमीर मक्का तुम्हारा ज़ाएर के लिए यह कोई कहना नहीं है कि ''यह आदमी कौन है ''सारा अरब व अजम उसे जानता है जिससे तुम इन्कार कर रहे हो । बेशक अल्लाह के तमाम बन्दों में वह सबसे बेहतर है। बेशक वह मुत्तक़ी है।कौम का असल में वही सरदार है। यह फात्मा का बेटा है जिस से तुम अजनबिय्यत बरत रहे हो।और इसी के नाना पर तमाम अम्बिया अल्लाह की नुबुव्वत खत्म हुयी है।

भाइयो! इसी तरह आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो सादात को पहचानने से इन्कार कर देते हैं हालांकि वह जानते हैं कि यह आले रसूल हैं। खुसूसन सय्यद बदीउद्दीन कुतुबल मदार रजि० की ज़ाते गिरामी को जानते हुए भी तजाहुले आरिफाना से काम लेते हैं। और सरकार की सियादत में इख्तिलाफ करते हैं हालांकि आप मुस्तनद मुहक्किककीन की हजारों कुतुब से सय्यद साबित हैं।

मैं ने इस किताब में इस बात को बहुत सी कुतुब से साबित करने की कोशिश की है हालांकि मैं इस का अहल नहीं था। यह मदारुल आलिमीन का फ़ैज़ो

करम है कि मसरूफियात के बावजूद बहुत कम मुद्दत में यह काम मुझ गुलाम से ले लिया। दुआ है कि अल्लाह इस तस्नीफ को शर्फे कुबूलियत अता फरमाए और उम्मत के लिए मश्अले हिदायत बनाए। आमीन

खाक पाए अहले बैत

मुहम्मद शज़र

वल्द सैय्यद महज़र अली

(सज्जादए आजम खानकाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ)

आले रसूल

मैं तुम में छोड़ जाता हूं कुरानो अपनी आल
वह कहते हैं जो दीन के पहले खतीब हैं
लाऐं वह क्या निगाह में जन्नत की राहतें
तैबा की नेमतें जिन्हें महज़र नसीब है

आल और रसूल- यह दो लफ्ज़ हैं। एक का मतलब औलादो अमजाद और दूसरे का मतलब पैग़म्बर।

जब यह दो लफ्ज़ मुरक्कब हो के एक जुमले की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं तो जुमला कहता है "रसूल की आल" और खुदा इस जुमले के लिए कहता है قُلْ لَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى (शूरा पारा 25:4)(तर्जुमा) "ऐ महबूब फरमा दीजिए कि मैं तुम से कारे रिसालत के बदले कुछ नहीं मांगता मगर हाँ अहले बैत की मुहब्बत"। रसूल हमें ईमान दे रहे हैं, रसूल हमें कुरान दे रहे हैं, रसूल हमें सलीका-ए-हयात दे रहे हैं, रसूल हमें لَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُمْ مِنْ خَشْيَةِ اِمْلَاقٍ "भूक के डर से अपने बच्चों का क़त्ल मत करो" का पैग़ाम दे रहे हैं, रसूल हमें

लाएहा-ए-अमल दे रहे हैं, रसूल हमें لا تمشی فی الارض مرحاً "जमीन पर अकड़ कर मत चलो" का पैगाम दे रहे हैं, रसूल हमें हयात के उसूलो ज़वाबित अता कर रहे हैं, रसूल हमें शराब की लत से दूर रहने की तलकीन कर रहे हैं, रसूल हमारे लिए रात रात भर खुदा की इबादत करके खुदा से हमारे लिए बख़्शिशत लब कर रहे हैं।

मांगे शब भर रब्बि हबली की दुआऐं मुस्तफा
हम करें आराम तकलीफें उठाऐ मुस्तफा

रसूल हमारे लिए दुनिया में राहत मांग रहे हैं और आखिरत में जन्नत मांग रहे हैं। इन सब के बदले में हम से अगर कुछ मांग रहे हैं तो सिर्फ अपनी आल की मुहब्बत मांग रहे हैं। कुरान ने कहा आले रसूल से मुहब्बत करो, अहादीस भी यही कह रही हैं।

وَاللهِ لَا يَدْخُلُ قَلْبَ رَجُلٍ الْإِيمَانُ حَتّٰى يُحِبُّهُمْ لِلّٰهِ وَ لِقَرَابَتِهِمْ مِنِّي (इब्ने माजा स.12)

(तर्जुमा)अल्लाह की कसम किसी शख्स के दिल में तब तक ईमान नहीं आ सकता जब तक मेरे अहले अहले बैत से अल्लाह के लिए और मेरी कराबत की वजह से वह मुहब्बत न रखे।

اَسَاسُ الْإِسْلَامِ حُبِّي وَ حُبُّ اَهْلِ بَيْتِي (कनजुल उम्माल तकती कलां जिल्द न09 स.228)

(तर्जुमा)इस्लाम की बुनियाद मेरी मुहब्बत और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है।

اُحِبُّوا اَهْلَ بَيْتِي لِحُبِّي (तिर्मिजी जिल्द न02 स.220)

(तर्जुमा)मेरी मुहब्बत की बिना पर मेरे अहले बैत से मुहब्बत रखो।

اِرْقبوا محمداً فی اهلِ بَيْتِهٖ (सही बुखारी जिल्द 1स.526)

(तर्जुमा)अहले बैत के बारे में मुहम्मद (स0) का लिहाज़ रखो।

مَعْرِفَةُ آلِ مُحَمَّدٍ بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ وَحُبُّ آلِ مُحَمَّدٍ جَوَازٌ عَلَى الصِّرَاطِ وَالْوِلَايَةُ لِآلِ مُحَمَّدٍ اَمَانٌ مِنَ الْعَذَابِ (शिफाए काजी अयाज जिल्द न02 स.37-38)

(तर्जुमा)आले मुहम्मद के मुकाम का इरफान हासिल करना जहन्नम से निजात है और आले मुहम्मद से मुहब्बत रखना पुल सिरात पार होजाना है और आले मुहम्मद की नुसरतो हिमायत करना अज़ाब से अमान पाना है।

पहली हदीसे पाक से मालूम हुआ कि कोई शख़्स उस वक्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक वह आले रसूल से क़राबत की वजह से मुहब्बत न रखे, मेरे लफ्जों में यह कह लीजिए कि वह मामिन नहीं जो आले रसूल से मुहब्बत न रखता हो।

दूसरी हदीस यह बताती है कि शहादत, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात के साथ साथ बुनियादे इस्लाम में आले रसूल की मुहब्बत भी शामिल है।

तीसरी हदीस यह बताती है कि अगर नबी से मुहब्बत करते हो तो आले नबी से भी मुहब्बत करो। बगैर आले नबी की मुहब्बत के नबी की मुहब्बत काबिले कुबूल नहीं।

चौथी हदीस यह कह रही है कि अहले बैत के बारे में मुहम्मद का लिहाज़ रखो कहीं ऐसा न हो कि आले रसूल की शान में गुस्ताखी हो और पास-ए-अदब टूट जाए।

पांचवी हदीस कहती है कि जहन्नम से निजात चाहते हो तो आले रसूल के मरतबे को समझो पुल सिरात पार करना हो तो आले रसूल से मुहब्बत रखो। अज़ाब से बचना हो तो आले रसूल की हर तौर पर नुसरतो हिमायत करो।

वैसे तो कुतुबे अहादीस में हुब्बे अहले बैत के मौज़ू पर अहादीस का एक ज़खीरा मौजूद है इस मुख्तसर सी किताब में उन सब का ज़िक्र मुमकिन नहीं लेकिन नबी की वह हदीसें जिन में उम्मत के हर फ़र्द के लिए एक वसिय्यत थी वह लिख रहा हूँ, पढ़िए

और अमल करने की कोशिश कीजिए:

قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ خَطِيْبًا بِمَاءٍ يُدعى خُماً بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةِ فَحَمِدَ اللّٰهَ وَاَثْنٰى عَلَيْهِ وَوَعَظَ وَ ذَكَرَ ثُمَّ قَالَ امابعدُ اَلَا اَيُّهَاالنَّاسُ فَاِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ يوشَكُ اَنْ يَّاتِيَنِىْ رَسُولَ رَبِّى فَاُجِيبُ ، وانا تَارِكٌ فِيْكُمُ الثَّقْلَيْنِ: اَوَّلَهُمَا كِتَابُ اللّٰهِ فِيْهِ الْهُدٰى والنور فَخذوُ بكتاب اللّٰهِ واستمسِكُوا بِهِ فحثَّ علىٰ كِتابِ اللّٰهِ ورغِبَ فيهِ ، ثم قال، واهلُ بيتى، اُذكُرُكُم اللّٰهَ فى اهلِ بيتِي اُذكُرُكُمُ اللّٰهَ فى اهل بيتى اذكركم اللّٰه فى اهل بيتى (सही मुस्लिम जि02 स.279)

रसूले पाक मक्के और मदीने के दरमियान एक मकाम पर खड़े हुए जिसे खुम कहते हैं। रसूल पाक ने खड़े होकर खुतबा दिया। उस में अल्लाह की हम्द व सना, वाज़ो नसीहत फ़रमायी फिर फरमाया हम्द व सना के बाद(कहना यह है कि)लोगो! मैं एक बशर हूँ, अनकरीब मेरे पास मेरे रब का फ़रिश्ता (पयामे रेहलत ले कर) आएगा और मैं उसे कुबूल कर लूंगा और मैं तुम लोगों के पास दो बड़ी वजनी चीज़ें छोड़ जा रहा हूँ एक किताब-ए-खुदा वन्दी जिस में नूरो हिदायत है अल्लाह की किताब को पकड़ो और मज़बूती से थामे रहो(यहां)आप ने कुरान के बारे में तरगीब दी और शौक दिलाया,फिर फरमाया, दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत हैं मैं तुम्हें मुतनब्बेह करता हूं कि

मेरे अहले बैत के हक में अल्लाह से डरो। तुम्हें मुतनब्बेह करता हूं कि मेरे अहले बैत के हक में अल्लाह से डरो। तुम्हें मुतनब्बेह करता हूं कि मेरे अहले बैत के हक में अल्लाह से डरो।''

رأیتُ رسول الله ﷺ فی حَجّتہٖ یومِ عرَفَةَ وھو علی ناقَتِہٖ قَصواء یَخطُبُ فسمِعتہٗ یقولُ ! یاایھاالناسُ اِنِی تَرَکتُ فِیکُم ماان اَخَذُتُم بِہٖ لن تَضِلوا کِتابُ اللّٰہِ وَعِترَتِی اھلُ بَیتِی

(सुनन तिर्मिज़ी जि02 स.219)

''हजरत जाबिर रज़ि0 फरमाते हैं अरफे के दिन मैंने रसूल स0 को हज्जतुल विदा में कसवा ऊँटनी पर खुतबा देते हुए देखा। आप फरमा रहे थे, लोगो ! मैं तुम्हारे पास दो चीज़ें छोड़ जा रहा हूं। अगर तुम उन्हें थामे रहोगे तो गुमराह हो ही नहीं सकते। यह चीज़े हैं अल्लाह की किताब और मेरी इतरत जो मेरे अहले बैत हैं।''

انی تارِکٌ فیکم کتاب اللّٰہ عزَّ وجَلَّ حبلٌ مَمدودٌبین السَّماء والارضِ وعِترتی اھلُ بیتِی واِنَّھا لَن یَّتَفرَّقا حتّٰی یرُدُّ اِلی الحَوضِ

(जामे सगीर जि01 स.57)

''मैं तुम्हारे दरमियान दो नायबो खलीफा छोड़े जा रहा हूँ। एक तो अल्लाह की किताब है जो आसमान और ज़मीन के दरमियान (नूर की) तनी हुयी रस्सी है और दूसरा नाएबो खलीफा मेरी इतरत है जो

मेरे अहले बैत हैं। यह दोनो एक दूसरे से कभी जुदा न होंगे यहां तक कि दोनों एक साथ हौज़े कौसर पर मेरे पास आऐंगे।

انی تارکُ فیکم ماان تمسکتم بہٖ لَن تضلُّوا بعدی احدھما اعظم مِنَ الآخَر کتابُ اللّٰہِ حبلٌ ممدودٌ مِنَ السماءِ الی الاَرُضِ وعترتی اھل بیتِی ولن یتفرقاحتیٰ یرُدا علی الحوض، فانظروا کیفَ تخلِفُونی فی فیہِما

(सुनन तिर्मिज़ी जि02 स.220)

(तर्जुमा)''मैं तुम लोगों के दरमियान ऐसी दो चीज़े छोड़े जा रहा हूं कि अगर उन को थामे रहोगे तो गुमराह हो ही नहीं सकते उन में से एक ज़्यादा शान वाली है जो आसमान से ज़मीन तक (नूर की) तनी हुयी रस्सी है और दूसरी चीज जो मेरी इतरत है जो मेरी खूसूसी अहले बैत है यह दोनों हमेशा साथ साथ रहेंगे। हत्ता कि दोनों एक साथ हौज़े कौसर पर मेरे पास आएंगे। लिहाज़ा इस पर नज़र रखो कि मेरी जगह जब तुम को कुरान और मेरी इतरत के साथ सुलूक करना हो तो कैसा सुलूक करोगे।

पहली हदीस बताती है कि मकाम खुम पर सरकार रिसालत स0 ने अपने खुत्बे में यह वसिय्यत फरमायी कि मैं उम्मत के लिए दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। एक कुरान जिसमें नूरो हिदायत है। इसे पढ़ते

रहना, इस से फ़वाएद हासिल करते रहना और दूसरी अहले बैत।

اذکرکم اللہ فی اھل بیتی اذکرکم اللہ فی اھل بیتی اذکرکم اللہ فی اھل بیتی

यह बात तीन बार आप ने दोहराकर ज़बरदसत ताकीद फरमायी कि मैं तुम्हें मुतनब्बेह करता हूँ कि मेरे अहले बैत के हक में अल्लाह से डरो कहीं किसी तौर पर भी उन की शान में गुस्ताखी न होने पाए। अगर खुदा न ख़्वास्ता हो गयी तो खुदा का अज़ाब तुम पर क़हर बन कर टूट सकता है।

दूसरी हदीस पाक में सरकार ने यह तलकीन फरमायी कि यह दोनों चीज़े जो मैं छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम उन्हें थामें रहोगे तो हरगिज़ हरगिज़ गुमराह हो ही नहीं सकते। अल्लाह की किताब को पढ़ते रहो और आले रसूल के दस्तो पा से अपनी अकीदत की आँखें मलते रहो। गुमराही से बचे रहोगे।

तीसरी हदीसे पाक में सरकारे रिसालत ने कुरानो अहले बैत को अपना खलीफा व नायब बताया और इस हदीस में यह भी वाज़ेह फरमा दिया कि कुरान व अहले बैत कभी एक दूसरे से जुदा न होंगे। जब तक कुरान रहेगा तब तक अहले बैत रहेंगे। जब तक अहले बैत रहेंगे तब तक कुरान रहेगा और यह

दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास एक साथ आऐंगे। अगर कौसर का जाम पीना है तो कुरानो अहले बैत के साथ हो जाओ अगर इन तक तुम्हारी रसाई हो गयी तो इन्हीं के साथ साथ तुम भी हौज़े कौसर तक पहुँच जाओगे।

चौथी हदीस पाक से मालूम हुआ कि नबी की इतरत ही नबी की अहले बैत है। فانظروا کیف تخلفو انی فی فیھما जब तुम्हें कुरान व अहले बैत के साथ सुलूक करना हो तो कैसा सुलूक करोगे। अगर अच्छा सुलूक करोगे तो आख़िरत की सआदत मंदी तुम्हारा मुक़द्दर है अगर बुरा सुलूक करोगे तो दुनिया व आखिरत में ज़िल्लत के सिवा तुम्हारे लिए कुछ नहीं।

इन अहादीस को पढ़ने में एक बात ज़हन में आती है कि नबी-ए-बरहक ने जब खुत्बा दिया था तो सामईन में आम लोग नहीं थे बल्कि नबी पाक के चहेते सहाबा रज़ि0 व अन्सारो मुहाजिरीन थे जिन के हाथों में दीन-ए-इस्लाम की तबलीग़ो इशाअत का अलम रहता था। अब सोचिए कि जिन की मुहब्बत व ताजीम सरकार ने सहाबए किराम पर वाजिब कर दी हो आम उम्मतियों के लिए उन की ताजीम व तौकीर कितनी ज़रूरी होगी।

कुरानो अहले बैत न होंगे कभी जुदा
अल्लाह के नबी का यह फ़रमान आ गया

लख़्ते जिगर मौला अली, सुकून-ए-क़ल्बे फ़ातिमा, राहत-ए-जांहसन, नूरे निगाहे हुसैन साहबे मकामे-ए-समदिय्यत वसिले मुकाम महबूबियत तबे ताबे-उल-अम्र हज़रत सय्यदना बदीउद्दीन कुत्बुल मदार अल हसनी वल हुसैनी जो हसनी हुसैनी सय्यद हैं।बाप की तरफ से हुसैनी और माँ की तरफ से हसनी। सभी यह जानते हैं। मगर कुछ ईमान दर बग़ल किस्म के लोग उनके सय्यद होने में इख्तिलाफ़ करते हैं हालांकि मुस्तनद कुतुब से उनका सय्यद होना साबित है। वह लोग जो एक आले रसूल का रिश्ता रसूल पाक से मुनकता करने की कोशिश करें और सय्यद को ग़ैर सय्यद कहें उन के लिए सरकार रिसालत का क्या हुक्म है अपने दिल पर हाथ रख कर यह हदीस पाक देखें।

انهم عترتی خُلِقوا مِن طینتی ورُزِقوا فهمی وعلمی فَوَیْلٌ للمُکذِّبینَ بِفَضْلِهم مِن اُمتی القاطعینَ فِیهم صُلّتیِ لاانالُ اللّٰهِ شفاعَتَهُمْ (कन्जुल उम्माल जि02 स.218)

(तर्जुमा)यह लोग मेरी इतरत हैं। यह मेरी तीनत से पैदा हुए हैं। इन्हें मेरी समझ और मेरे इल्म का

हिस्सा मिला है। मेरे उस उम्मती के लिए तबाही है जो उनकी फजीलत का मुंकिर है और मुझ से जो उनका तअल्लुक है उसे वह काटना चाहता है। अल्लाह तआला ऐसे लोगों को मेरी शफाअत से महरुम कर देगा।

इस हदीस पाक में सरकार ने वाज़ेह फरमा दिया कि जो उन की फजीलत का मुन्किर है उन से बुग्ज़ व कीना रखता है उन की शोहरत से जलता है और इस बिना पर यह कहता है कि वह आले रसूल हैं ही नहीं यह कह के वह नबीए पाक से उनका तअल्लुक काटना चाहता है ऐसे लोगों को खुदा नबीए पाक की शफाअत से महरूम फरमा देगा।

हाय वह बद किस्मत लोग जो नबी से आले नबी का तअल्लुक काटने की वजह से शफाअत-ए-नबी से महरूम हो गये। ऐसे लोग़ों पर खुदा और रसूल ने लानत भेजी है:

سِتةٌ لعنتُهُم واللهُ وَکُلَّ نَبِیٍ مُستجَابٌ الزایدُ فی کتابِ اللّٰهِ، والمُکَذِّبُ بِقدُرَ اللّٰهِ والمُتسَلَّةُ بالجَبرُوتِ لِیعُزَّ مَنْ اَعزَّهُ اللّٰهُ والمُستَحِلُّ لِحَرَمِ اللّٰه والتارِکُ بِسُنّتی (मिश्कात स.22)

(तर्जमा)छ:किस्म के लोग हैं जिन पर मैं ने और मेरे अल्लाह ने लानत भेजी है और हर नबी की दुआ

व बद दुआ कुबूल है। वह लोग यह हैं (1)अल्लाह की किताब में कुछ बढ़ाने वाला (2)तकदीर का मुन्किर (3)वह शख्स जिस ने लोगों को दबा कर तसल्लुत हासिल किया हो जिस का नतीजा यह होगा कि जिन लोगों को अल्लाह ने (उनके कुफ्र या फिस्क की वजह से) ज़िल्लत के दर्जे में रखा है वह उनको इज्जत देगा (4)वह जो हरमे काबा की बे हुर्मती करे (5)वह जो मेरी इतरत के साथ ऐसा सुलूक करे जिसे अल्लाह ने हराम कर दिया है (6)और मेरी सुन्नत का तर्क करने वाला।

शान-ए-आले रसूल में गुस्ताखी का सबब

कुरानो हदीस आले रसूल से मुहब्बत रखने का पैग़ाम दे रहे हैं उनसे निस्बत रखने का हुक्म दे रहे हैं اذکر کم اللہ فی اہل بیتی की वईद सुनाई जा रही है फिर भी कुरान व हदीस पढ़ने वाले लोग ही आले रसूल से इख्तिलाफ़ क्यों करते हैं, उनकी शान व अज़्मत के खिलाफ लब कुशाई क्यों करते हैं। इसका सबब तलब-ए-इज़्ज़तो शोहरत है। हर अमीर चाहता है कि उसकी जैसी इज़्ज़त किसी की न हो।

हर आलिम चाहता है कि उस के इल्म की वजह से लोग उसी की ताज़ीम करें। हर बड़ा चाहता है कि उससे बड़ा कोई न दिखाई दे मगर जब कोई आम आले रसूल भी उम्मते रसूल देख लेती है तो इमारत व इल्म भूल कर खूने रसूल की ताजीम में अपना सर अकीदत से खम कर देती है यह सब उन को पसंद नहीं आता जो इमारतो इल्म के गुर्रे में अहले बैत को भूल चुके हैं यही उन के लिए अहले बैत से मुखालिफत का सबब बन जाता है। दौरे यजीद से लेकर अब तक इस की बेशुमार मिसालें है जब इज्जत हासिल करने की उन्हें कोई सूरत नजर नहीं आती तो वह खुद को आले रसूल कहने लगते हैं। ऐसे लोग जो सैय्यद नहीं हैं और खुद को सैय्यदी के तमगें से आरासता होने के ख्वाब देखते रहते हैं। उन्हें किसी रिवायत में क़रीबुल कुफ़्र कहा गया है, किसी में गुमराह कहा गया है और किसी में यहाँ तक कहा गया है कि वह जन्नत की खुश्बू तक न पाऐंगे।

مَن اِنتَسَبَ اِلیٰ غَیرِ اَبِیہِ فَھُوَ یَعلَمُ لا یَجِدُ رائِحَةَ الجَنَّة

(रवाहु अततिर्मिज़ी)

(तर्जुमा)जिस ने अपने आप को किसी और बाप की तरफ मन्सूब किया और वह यह जानता है कि ऐसा नहीं है वह जन्नत की खुश्बू तक न पाएगा।

इस हदीस पाक में यह वाज़ेह फरमा दिया गया कि जिस ने खुद को किसी और बाप की तरफ मन्सूब किया किसी और बिरादरी या कौम की तरफ निस्बत की तो वह जन्नत की खुश्बू तक से महरूम हो जाएगा। मगर वही उलेमा जो यह सब जानते हैं खुद के साथ अपनी भोली भाली कौमों तक को जन्नत की खुश्बू से महरूम कर देते हैं। यह पहले कौम को यह बावर कराते हैं कि तुम दुनिया में हकीर हो फिर सियादत के ख्वाब दिखा कर आले रसूल से मुखालिफत करने को उकसाते हैं। हालांकि इस्लाम में कोई कौम रज़ील नहीं कोई कौम बड़ी नहीं और कोई कौम छोटी नहीं।

اَلْمُسْلِمُ اَخُ الْمُسْلِمِ के तहत हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है चाहे वह किसी भी बिरादरी का हो क्योंकि इस्लाम मसावात का मज़हब है, एकता का मज़हब है। कुरान मुकद्दस मे रब तआला फरमाता है: يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَّأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوباً وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

(तर्जुमा)ऐ लोगों ! हमने तुम्हें एक मर्द व औरत (आदम व हव्वा अलै0) से पैदा किया और यह जातें बिरादरियाँ सिर्फ इसलिए बनायीं कि तुम एक दूसरे

को पहचान सको। बे शक अल्लाह के नजदीक तो वह है जो तुम में सब से मुत्तकी है।

कुरान ने बता दिया कि सभी एक मर्द व औरत से हैं। यह जातें यह बिरादरियां सिर्फ एक दूसरे को पहचानने के लिए हैं। अल्लाह का मुकर्रब बन्दा ज़ात और बिरादरी की बुनियाद पर नहीं बना जा सकता , तक़्वा पैदा करलो खुद ही बड़े बन जाओगे। नमाज़ की पाबंदी करो बड़ाई मिल जाएगी, रोज़ा, ज़कात, हज, बड़ों की इज्ज़त, छोटों पर शफकत का माद्दा पैदा कर लो बुजुर्गी हासिल हो जाएगी।

सरकारे दो आलम (सल0) फरमाते हैं:

لَا فَضْلَ لِعَرَبِيٍّ عَلٰى عَجَمِيٍّ وَلَا لِعَجَمِيٍّ عَلٰى عَرَبِيٍّ وَلَالِاَبْيَضَ عَلٰى اَسْوَدَ وَلَالِاَسْوَدَ عَلٰى اَبْيَضَ اِلَّا بِالتَّقْوٰى

(तर्जुमा)किसी अरबी को किसी अजमी पर फ़ौकियत नहीं है और न ही किसी अजमी को अरबी पर फौकियत है। किसी गोरे को काले पर फौकियत नहीं है और न काले को गोरे पर सिवाए तक़्वा के ।

इस्लाम में कोई छोटा बड़ा नहीं सब बराबर हैं। तो झूटा सय्यद बनने से क्या फ़ायदा? सच्चे मुसलमान बनो, सच्चे आशिके अहले बैत बनो। जितने औलियाए किराम हुए उलमा हुए, अइम्मा हुए,

मुजतहिदीन हुए क्या वह सब के सब सय्यद थे? अगर नहीं तो क्या उन्होंने खुद को झूटा सय्यद बनाने की कोशिश की या नहीं ? फैसला खुद कर लीजिए कि इज्जत व वकार सय्यद बनने में नहीं बल्कि सच्चा आशिके रसूल और सच्चा मुसलमान बनने से है। अगर नूह की उम्मत के लिए नूह की कश्ती निजात का सबब थी अगर नूह की उम्मत के लिए नूह की कश्ती जन्नत तक पहुंचने का जरिया थी अगर नूह की उम्मत के लिए नूह की कश्ती गुमराही से निकाल कर हिदायत तक पहुंचाने का रास्ता थी तो मुहम्मद स0 की उम्मत के लिए आले रसूल जन्नत का रास्ता, उम्मते मुहम्मद स0 के लिए अहले बैत हिदायत का सामान है, उम्मते रसूल के लिए आले रसूल अच्छाइयों तक पहुंचाने का रास्ता है।

हज़रत अबूज़र गफ्फ़ारी रजि0 से रवायत है कि सरकारे दोआलम स0 ने फरमाया कि

اِنَّ مَثَلَ اهلِ بَيتِى فِيكُم مِثلُ سَفِينَةِ نُوحٍ مَن رَكِبَها نَجَا وَمَن تَخَلَّفَ عَنهَا غَرَق

(मुसतदरक ब हवाला कनजुल उम्माल जि06 स.215)

(तर्जुमा)मेरे अहले बैत तुम लोगों में ऐसे हैं जैसे (तूफान से बचने के लिए) नूह अलै0 की जो इस

कश्ती पर सवार हो गया उसने डूबने से निजात पायी और जो इस से अलग रहा वह डूब गया।

फिर इस हदीस पाक में सरवरे दो आलम स0 ने फरमाया कि मेरे अहले बैत कश्तिये नूह की तरह है जो इस पर सवार हा गया उस ने निजात पायी जो इस से अलग रहा वह डूब गया। जो लोगों को सादात दुश्मन बनाते है उनके लिए इस हदीस में ज़बर्दस्त वईद की गयी है कि अगर डूबने से बचना चाहते हो तो न खुद आले रसूल से दूर रहो और न दूसरों को करो। यह अमल दुनिया व आखिरत में तुम्हारे लिए तबाही का सबब बन सकता है और जो मुहब्बत करते हैं उनके लिए आले रसूल की मुहब्बत शफाअत का सबब है।

اَربَعَةٌ اَنَا لَهُم شَفِيع يَومَ القِيامَةِ المُكَرَّم لِذُرِّيَّتِى وَالقَاضِى لَهُم حَوَائِجُهُم وَالسَّاعِى لَهُم فِى اُمُورِهِم عِندَ ها وَاِلَيهِ المُحِبُّ بِهِم بِقَلبِهِ وَلِسَانِهِ (कनजुल उम्माल जि06 स.217)

(तर्जुमा)चार किस्म के लोगों की मैं शफाअत करूंगा (1)एक वह जो मेरी जुर्रियत की तकरीम करे (2)वह जो उन की जरूरतें पूरी करे (3)वह जो उनके ऐसे कामों में कोशिश करे जिन की उन को ज़रूरत है (4)वह जो अपने दिल और ज़बान से उनका मुहिब हो।

अहले बैत एक बड़ा मौज़ू है इन्शा अल्लाह किसी और मौक़े पर इस मौज़ू पर भी कलम चला कर अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश करूंगा।

यह किताब आफ़ताबुल आरेफ़ीन, माहताबुल कामिलीन, लख़्ते जिगर मौला अली, सुकूने क़ल्ब फ़ातेमा, आले रसूल औलादे बुतूल हज़रत सय्यदना बदीउद्दीन कुतुबुल मदार का हसब व नसब सय्यद होने का साबित करने के लिए है जो कि हजारों कुतुब से साबित है । जिस किताब में आप को ग़ैर सय्यद लिखा गया है उनमें किसी मुस्तनद किताब का हवाला नहीं और सरकार मदार पाक के सय्यद होने पर बे शुमार मुसतनद हवाले मौजूद हैं। मिर्अते मदारी में जिस किताब ईमाने महमूदी के हवाले से सरकार मदार पाक को ग़ैर सय्यद साबित करने की नाकाम कोशिश की गयी है उस नाम की किताब तसनीफातो तालीफात की दुनिया में कहीं है ही नहीं। मैंने उन मुस्तनद किताबों के हवाले दे कर सरकार मदार की सियादत साबित की है जिन में अकसर वह किताबें हैं जो मिर्अते मदारी से सैकड़ों बरस पहले लिखी गयी हैं। पूछना चाहूंगा कि कोई हदीस भी सिर्फ एक जगह मिले और उस में कोई मुस्तनद रावी भी न हो और दूसरी हदीस बुखारी शरीफ में भी हो मुस्लिम शरीफ

में भी हो तिर्मिज़ी शरीफ में भी हो इब्ने माजा में भी हो चाहे वह ज़ईफ ही क्यों न हो मगर तवातुर के साथ मिलने की वजह से मशहूर व अहसन कहलाती है तो मिर्अते मदारी में जो यहूदिउन नस्ल वाली इबारत है वह सिवाए मिर्आते मदारी के दूसरी किसी किताब में नहीं और जिस ईमान महमूदी के हवाले से आप को यहूदियुन नस्ल लिखा है उस नाम की किताब भी कहीं नहीं मौजूद तो उस इबारत को कैसे काबिले कुबूल माना जाएगा। वह सारी किताबें मअ असनाद के अपने माथे की आँखों से पढ़िये जिन में मदार पाक को सहीहुन नसब आले रसूल लिखा गया है।

किताब के हवाले से पहले इस के मुसन्निफ की इल्मी लियाक़त का अन्दाजा लगाने के लिए मैं उस की कुछ तसनीफ़ात और मुख़्तसर सवानेह लिखना चाहूंगा ताकि मुसन्निफ़ के इल्म का अन्दाजा लगाया जा सके। सब से पहले मैं उस किताब से आग़ाज करना चाहता हूँ जिस का नाम सफ़ीनतुल औलिया है और यह किताब सन्1049 हि0 मुताबिक सन्1639 ई0 में मुकम्मल हुयी। यह किताब पहली मर्तबा सन्1269 मुताबिक1852ई0 में आगरा में तबा हुयी फिर लखनऊ में सन् 1876ई0 और कानपुर में सन्1884ई0 में इस के एडीशन शाऐ हुए। अब यह

किताब ईरान में ब तसहीह सय्यद मुहम्मद रज़ा जलाली नाइनी तेहरान में तबा हुई है ।

इस किताब के मुसन्निफ दारा शिकोह क़ादरी हैं जो बादशाह शाहजहां के पहले बेटे हैं उन की विलादत मुमताज़ महल के बत्न से 19 सफर 1024 हि0 मुताबिक 20 मार्च सन्1615 को अजमेर में हुयी। उनके दादा शहंशाह जहांगीर ने उन का नाम दारा शिकोह रखा था। अबू तालिब कलीम ने उनकी विलादत पर कसीदा कहा और "गुले अव्वलीन गुलिस्ताने शाही" से तारीख़ निकाली :

बगोश दिल अज़ बहरे तारीख़ आमद
गुल अव्वलीन गुलिस्ताने शाही
(1024 हि0)

उनकी बेगम का नाम करीमुन निसा अल मारूफ बेही नादेरा बेगम है जो सुल्तान परवेज़ की दुख्तर थीं। उन्होंने सन्1050 हि0 मुताबिक सन्1640 ई0 में मुल्ला शाह बदख़्शी से शर्फ़े बैअत हासिल किया जो हज़रत मियाँ मीर के मुरीद थे और कादरी सिलसिले के शेख थे। उसी निसबत से दारा शिकोह को क़ादरी लिखा जाता है। जहां दारा शिकोह एक शहंशाह की औलाद थे वहीं वह इल्मी व अदबी खुसूसियात के भी हामिल थे। दारा शिकोह सूफी भी थे और आलिम भी और

आलिम होने के साथ साथ एक अच्छे शाएर भी थे। उनकी इसी गजल से इनकी शेएरी सलाहियतों का अन्दाजा लगाया जा सकता है:

दिल सुपुर्दम ब दस्त दिलदारी कि चू ऊ नेस्त दर जहां यारी

मस्तो बे खुद बशू कि याबी यार यार हरगिज़ नयाफ्त हुश्यारी

अन्दरीं इश्क हर चे मी गोयम अन्दकी गुफ्ता अम अज़ बसयारी

सुबहा दर दस्त जाहिदां खुवैस्त कादरी रा बस अस्त ज़न्नारी

उन्होंने सफीनतुल औलिया के अलावा बहुत सी किताबों की तसनीफो तालीफ की है ।

(1)**दीवान दारा शिकोह** (अकबर आज़म)या दीवान कादरी के नाम से उन का ये दीवान मुरत्तब है जो रुबाइयात और ग़ज़लियात पर मुश्तमिल है।

(2)**सकीनतुल औलिया:** यह किताब दारा शिकोह कादरी ने अटठाईस साल की उम्र में लिखनी शुरू की और सन्1058 हि0 मुताबिक सन्1648 ई0 तक इस मे इज़ाफ़े होते रहे। यह किताब बयान सिलसिलाए कादरिया, हजरत मियाँ मीर रह0 मुल्ला शाह बदख्शी रह0 और उनके ख़ुलफा व असहाब के

फजाएल पर मुश्तमिल है।

(3)**रिसाला हक नुमा:** यह रिसाला दारा शिकोह ने 1645 हि0 ता सन्1677 हि0 में तसनीफ़ किया।

(4)**हसनातुल आरिफीन:** इस किताब में दारा शिकोह कादरी ने उलमाए इस्लाम के उन एतराज़ात का जवाब दिया है जो उनके ग़ैर दीनी अकाएद व नज़रियात पर किये गये थे यह किताब सन् 1062 हि0 मुताबिक सन्1651 ईस्वी में शुरू होती है और सन् 1064 हि0 मुताबिक सन् 1652 ई0 में पायाए तकमील को पहुंचती है। इस में दारा ने अपने अक़ायद व नज़रियात की तावीले पेश की है।

(5)**मजमउल बहरैन:** यह किताब फारसी मत्न के साथ मअ अंग्रेज़ी तर्जुमे के मौलवी महफूज़ुल हक़ ने सन् 1929 ई0 में शाऐ करायी फिर सन् 1325 हि0 में सय्यद मुहम्मद रज़ा जलाली नाइनी ने तेहरान से शाऐ करायी।

(6)**सिर्रे अकबर या सिर्रे असरार:** दारा शिकोह ने इस किताब में 50 हिन्दी उपछन्दों का फारसी में तर्जुमा किया है। यह सन् 1910 ई0 में जयपुर में तीन जिल्दों में शाऐ हुयी और सन् 1240 हि0 शम्सी मुताबिक सन् 1962 ई0 में सय्यद मुहम्मद

रज़ा जलाली नाइनी और डाक्टर तारा चन्द ने चन्द ख़त्ती नुस्खों के मुतून संस्कृत से मुकाबला करके उसे तेहरान में शाऐ कराया।

(7)**सवाल व जवाब दारा शिकोह बाबा लाल दास:** यह मुख़्तसर सा रिसाला दारा शिकोह और भगत कबीर के चेले बाबा लाल दास के सवालो जवाब पर मुश्तमिल है।

(8)**नामाए इरफानी:** यह रिसाला उन मकतूबात पर मुश्तमिल है जो दारा शिकोह ने मुख़्तलिफ़ मशाएख़ के नाम लिखे।

ग़र्ज़ कि दारा शिकोह एक क़ादरी बुजुर्ग की निस्बतों से फैज़ बार उस शख़्सियत का नाम है जिसे एक मुहक़्क़िक़ कहा जा सकता है। यह सारी तसनीफ़ात उन की इल्मी और अदबी शख़्सियत के रूप में उनकी पहचान कराती हुयी नज़र आ रही है। यह अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया के स0 187 पर कलम बन्द करते हैं।

हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुददस सिर्रहू

"लकब ईशां शाह मदार अस्त व मुरीद शेख़ मुहम्मद तैफ़ूर निस्बतो इरादत ईशां ब सबबे किब्रे सिन या जिहते दीगर ब पंज या शश वास्ता ब हजरत रिसालत पनाह स0 मी रसद ग़राएबे अहवाल व अजाएबे अतवार व मुकामात बुलन्द व करामात अरजुमंद दाश्ता अन्द व बुजुर्गी हजरत शाह मदार ज़्यादा अज़ आंस्त कि दर तहरीर व तक़रीर आयद लिबासेके यकबारी पोशीदंद दीगर एहतियाज शशतन न शुद व हमेशा सफ़ेद व पाकीज़ा समांदंद व शेख अब्दुल हक देहल्वी नविश्ता अंद कि ईशां दर मुकामे समदियत बूदंद व आं मरतबए सालिकान अस्त व अज़ जिहत जमाल ब कमाले कि हक तआला ब ईशां उफ्तादी बस बे इख्तियार सुजूद कर्दी अज़ नजबत हमेशा बुर्क़ा बर रूए खुद मी अंदाख्तन। वफ़ाते ईशां हफदहुम जमादिउल ऊला साल हश्तसद व चहल हिजरी बूदह व कब्र ईशां दर मौज़ा मकनपुर कि अज़ तवाबे क़न्नौज अस्त वाके शुदा व हर साल दर माह जमादिउल अव्वल कि उर्स ईशां अस्त क़रीब ब पंज शश लक आदम मर्द व ज़न सगीर व कबीर अज़ अतराफ़ो जवानिब हिन्दुस्तान दर आं रोज़ ब ज़ियारत रौज़ए शरीफह ईशां बा अलमहाय बिसयार जमा मी शुअन्द व हमा नज़रो नियाज़ मी आरंद व करामात व ख़वारिक़े अजीबा

गरीबल हाल नीज़ नकल मी कुनद व अज चहार अहले हिन्दुस्तान अज़ वज़ओ व शरीफ दो हिस्सा मुरीद हजरत पीर दस्तगीर गौस सक़लैन शाह मुहीउद्दीन सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी रजि0 अंद अमा अशराफ़ बेश्तर व यक हिस्सा मुरीद शाह मदार अमा अशराफ़ बेश्तर व नीम हिस्सा मुरीद हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती व नीम हिस्सा मुरीद मखदूम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी कुददसल्लाहु असरारहुम"।

हज़रत सय्यद बदीउद्दीन कुददुसू सिर्रहू

(तर्जुमा)आप का लकब शाह मदार है। आप शेख मुहम्मद तैफ़ूर शामी के मुरीद हैं। आप का सिलसिला आप की उम्र की तिवालत की वजह से या किसी और वजह से पांच या छः वास्तों से आं हज़रत स0 तक पहुंचता है। आप के अजीब व गरीब अहवालो अतवार हैं। हजरत शाह मदार का दर्जा इतना बुलन्दो बाला है कि अहातए तहरीर में नहीं आ सकता। आप ने जो लिबास ज़ेबे तन फरमा लिया उसे दोबारा धोने की ज़रूरत न पड़ी हमेशा साफ सुथरा रहा। शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहल्वी ने तहरीर फ़रमाया कि आप मुकामे समदिय्यत पर हैं जो सालिकों का एक मुकाम है और अल्लाह ने आप को

ऐसा हुस्नो जमाल अता किया कि जो आप को देख लेता बेखुदी के आलम में सजदा रेज़ हो जाता था इसलिए आप हमेशा नकाब डाले रहते थे। आप ने 7 जमादिउल अव्वल सन् 840 हि0 में वफ़ात पाई, आप की कब्र मुबारक मकनपुर में है जो कस्बा कन्नौज के मुज़ाफात में से है। हर साल जमादिउल अव्वल के महीने में आप के उर्स की तकरीब मनायी जाती है जिस में पांच छः लाख आदमी मर्द व औरत बूढ़े बच्चे हिन्दुस्तान के अतराफो जवानिब से उस रोज़ सरकार के रौज़े की ज़ियारत के लिए जमा होते हैं और नज़्रो नियाज़ पेश करते हैं। आज भी इतनी मुद्दत गुज़र जाने के बाद अजीबो गरीब वाक़िआत देखने में आते हैं। अहले हिन्द (पुराना हिन्दुस्तान जिसमें पाक और बंगला देश वगैरा भी शामिल हैं) के चार हिस्सों में दो हिस्से आबादी के अशराफ गौसुस सकलैन हजरत शेख मुहीउद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी के हल्का-ए-इरादत में शामिल हैं। एक हिस्सा शाह मदार के मुरीदों का है जिन में ख़वास हैं और एक हिस्से में निस्फ हिस्सा ख्वाजा-ए-ख्वाजगान हजरत मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी के मुरीदों का है और निस्फ मखदूम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी के मुरीदों का है। "दारा शिकोह कादरी ने हजरत सय्यद बदीउद्दीन कुददस सिर्रुहू लिख कर यह जाहिर किया कि मदारे

पाक सय्यद हैं गुलशने अहले बैते मुस्तफा की एक कली हैं फिर आप ने तहरीर फ़रमाया कि मदारे पाक का एक दो नहीं तीन नहीं चार नहीं बल्कि पाँच या छः वास्तों से आका-ए-कुल खत्मे रुसुल मुहम्मद अरबी स0 तक पहुंचता है। अजीबो गरीब अहवाल से मुराद आप का ज़िन्दगी भर खाना न खाना, पानी न पीना, चेहरे पर नक़ाब डाले रहना और नकाब खुलते ही मख़लूके खुदा का बे खुदी में सजदा कर लेना वग़ैरा है।

आगे आप ने यह भी तहरीर फरमा दिया कि कुतुबुल मदार का मर्तबा इतना बुलन्दो बाला है कि अहातए तहरीर में नहीं आ सकता। (इन्शा अल्लाह इस मौज़ू पर एक मुकम्मल किताब आ रही है) आप ने तहरीर फरमाया कि आज भी इतनी मुद्दत गुज़रने के बाद अजीबो गरीब वाकिआत देखने में आते हैं । जैसे कि रोज़ अस्र के बाद अबाबीलों का रौज़ए मदार का चक्कर लगाना और मग्रिब से पहले गायब हो जाना, मकनपुर शरीफ की अकसर मज़ारों का इन्सानो की तरह सांस ले कर अपनी ज़िन्दगी का सुबूत देना। मकनपुर शरीफ में दफ़न मुर्दो का कफ़न सालों तक सही सलामत रहना, शब में रौज़ए मदार का चमकना वगैरह है। आप ने यह भी तहरीर फरमाया कि उर्स

की 17वीं तारीख को उस दौर में जब मुसाफिरत के लिए वह ज़राए नहीं मौजूद थे जो आज मौजूद हैं पाँच छः लाख लोग हिन्दुस्तान के अतराफो जवानिब से बारगाहे मदारुल आलमीन में हाज़िर होते थे यानी उस दौर का सबसे बड़ा उर्स उर्स मदारुल आलमीन ही था। नीज यह भी तहरीर किया कि हिन्दुस्तान की आबादी के चार हिस्सों में पूरा एक हिस्सा खवास मदारी था और चूंकि उस वक्त सभी सहीहुल अक़ीदा सुन्नी मुसलमान थे बकिया तीन हिस्से भी आप के मानने वालों में थे।

(2)

मिर्आते मदारी लिखे जाने से तकरीबन 78 साल पहले एक चिश्ती मुसन्निफ हजरत ख़्वाजा कमाल (जो शाह मीना के मुरीदों में थे)ने एक किताब तोहफतुस सअदा नाम की लिखी जो सन् 1016 हि0 में लखनऊ से शाए हुयी। आपने सरकार मदारे पाक को इस किताब में सिर्फ सय्यद ही नहीं लिखा बल्कि पूरा शजरए मदारिया अपनी मालूमात के मुताबिक़ तहरीर फ़रमाया। आप इस किताब के सफहा 15 पर रक्म तराज़ हैं:

"नाम हजरत शाह बदीउद्दीन अस्त व लकब शाह मदार ईशां उवैसी बूदंद शाह मदार अज़ सादाते हुसैनी बूदंद। नामे पिदर ईशां अबू इसहाक शामी व नाम मादर बीबी हुवैदा व जद जैनुल आबिदीन हुसैनी इब्ने मूसा काजिम इब्ने इमाम जाफर सादिक इब्ने मुहम्मद बाकर इब्ने जैनुल आबिदीन इब्ने इमाम हुसैन शहीदे करबला रजिअल्लाहु अन्हुम।

(तर्जुमा)"आप का नाम हजरत शाह बदीउद्दीन है और लकब शाह मदार। आप उवैसी थे। शाह मदार सादात हुसैनी में थे। आप के वालिद का नाम अबू इसहाक शामी और वालिदा का नाम बीबी हुवैदा और दादा का नाम जैनुल आबिदीन हुसैनी था जो मूसा काजिम के बेटे जो इमाम जाफर सादिक़ के बेटे जो इमाम मुहम्मद बाकर के बेटे जो ज़ैनुल आबिदीन के बेटे जो इमाम हुसैन शहीदे करबला के बेटे रजियाल्लाहु अन्हुम।"

यहां काबिले गौर बात यह हैं कि मुसन्निफ सिलसिला चिश्तिया के वह बुजुर्ग हैं जिन का जमाना साहबे मिर्अते मदारी से बहुत पहले का है।

मिर्अते मदारी की उस इबारत (जिस में सरकार मदारे पाक को ग़ैर सय्यद कहा गया है)की तर्दीद सिर्फ साहिबे सफीनतुल औलिया साहिबे मदारे

आजम साहिबे तोहफतुस सअदा वगैरह की इबारत ही से नहीं होती बल्कि मुल्क हिन्दुस्तान के बाहर बसने वाले उन मुहक़्क़ेक़ीन और मुअर्रिखीन की तहकीकात से भी हो जाती है जो दुनिया के कोने कोने में जा कर सरकार मदार पाक और दीगर औलिया किराम पर तहकीक करते हैं ऐसे बहुत से मुअर्रिखीन ने इस इबारत को मुस्तरद और कलअदम करार दिया है जैसे अमेरिका का मशहूर मुअर्रिख Gert Jan Vangeriver अपनी तहकीक में लिखता है:

Authors attribute a Sayyed (descendant) of the prophet Muhammad s.a.w.) ancestry to Bade al Din (Sukoh, 187) and trace his descent back to Imam Jafar al-Sadiq (d.148/765; Naqshbandi 28). The statement that Badi al Din was a converted jew (Chishti, 41) is not supported by other sources.

(तर्जुमा)मुसन्निफीन आप को सय्यद (आले रसूल) कहते हैं।(दारा शिकोह187) उन का नसब इमाम जाफर सादिक रजि0 तक पहुंचता है। (नक्शबंदी,28-765/148) और यह कौल कि बदीउद्दीन यहूदी से मुसलमान हुए(चिश्ती,41) दूसरी किसी भी दलील से साबित नहीं है।

ऊते नाम की एक मुअर्रिख जो जर्मन की एक यूनिवर्सिटी में लेकचरार है और मदार पाक पर उस ने पी एच डी की है वह अपनी तहकीकात का रिज़ल्ट अपनी किताब में बयान कर रही है कि:

In the Mir'ate Madari it is said that his father was a jew and that Badi'al Din was educated according to the Jewish tradition. This seem to be doubtful however , as in later works his Genealogy is traced to the family of the prophet Muhammad s.a.w. moreover, The saint calls himself a Saiyid in his letter to Qazi Shihab al Din indicating his descent from the prophet family.

(तर्जुमा)जैसा कि मिर्आते मदारी में कहा गया है कि उन के वालिद यहूदी थे और बदीउद्दीन ने यहूदी तरीकों के मुताबिक इल्म हासिल किया यह झूट लगता है किसी भी तरह, तहकीक के मुताबिक वह रसूलुल्लाह के घराने से साबित होते हैं इस के अलावा सूफी (मदार पाक) ने खुद अपने आप को शहाबुद्दीन को लिखे खत में सय्यद लिखा है और खुद को रसूलुल्लाह की नस्ल में बताया है।

ऊते और वेंगलेलोर के अलावा भी बहुत से अंग्रेज़ मुहक्किककीन ने आप को सय्यद लिखा है और

आप की सवानेह मुरत्तब की है । इन्शा अल्लाह अगली किताब में इन सब का भी ज़िक्र होगा।

साहिबे मिर्अते मदारी ने सिर्फ मदारे पाक को ही यहूदियुन नस्ल नहीं लिखा बल्कि मखदूम साबिर कलयरी को भी औलादे बनी इस्राईल में अपनी दूसरी तसनीफ मिर्अतुल असरार में लिख दिया है जबकि मखदूम साबिर कलयरी रह0 भी सादाते बनी फातमा से हैं।

अब्दुर रहमान चिश्ती अपनी किताब मिर्अतुल असरार के सफहा 851 पर लिख रहे हैं कि: शेख अलाउद्दीन अहमद साबिर कुददस सिर्रुहू अम्बिया-ए-बनी इस्राईल की औलाद में से थे जिन का सिलसिला नसब हजरत मूसा अलै0 से जा मिलता है।

जिस तरह से सय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार जाफरी सय्यद हैं उसी तरह से सय्यदना मख़दूम साबिर कलयरी रह0 भी जाफरी सय्यद हैं। इन दोनों का शिजरा सय्यद इसमाईल बिन सय्यद अब्दुर रहमान सय्यद मूसा काज़िम से इमाम जाफर रजि0 तक पहुंचता है। अब्दुर रहमान चिश्ती की किताबों में इस तरह की बहुत सी गैर जिम्मेदाराना इबारात मिलती हैं

जिस के मुतअल्लिक बहुत से उलमा व सूफिया ने कलाम किया है जैसे कि उन्होने यह तहरीर कर दिया कि कुतुबुल मदार ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के इशारे पर हिन्दुस्तान का सफर किया हालांकि सरकार मदारे पाक तबे ताबईन में हैं और उनका जमाना सरकार गरीब नवाज़ से तकरीबन 300 साल पहले का है। सरकार गरीब नवाज की सन विलादत 531 हि0 है। इसी को दलील बनाकर आज एक जाहिल अहमक और ईमान दर बग़ल किस्म के मौलवी ने यह तहरीर कर दिया कि सरकार मदार पाक ने बारगाहे ख़्वाजा गरीब नवाज में गुलामाना हाजिरी दी जबकि कुतुबुल मदार सरकार गरीब नवाज़ के साथ साथ हिन्दुस्तान के तकरीबन हर वली के अकाबिर में हैं ।इन दोनों बातों की किसी किताब से कोई सनद नहीं मिलती।

(3)

हजरत शेखुश शुयूख़ अल्लामा जानी मुहम्मद इब्ने अहमद अल-क़ानी जो अपने दौर के एक बहुत बड़े आलिम और मुहक़्क़िक़ हैं उन्होंने अरबी ज़बान में बहुत सी किताबों की तसनीफ़ की है आप ने सन्1312 हि0 में अरबी में एक किताब लिखी जिस में मदारे पाक के अहवाल मनज़ूम तहरीर फ़रमाये। इस

किताब का नाम ''अल कवाकिबुद दरारिय्या फी तन्वीरिल मनाकिबिल मदारिया''। इस के सफहा 15 पर आप मदार पाक का शिजरा नसब लिखते हैं:

اَن الشَّیخَ القُطُب مَدَار رَضِیَ اللّٰهُ عَنهُ تَوَلَّدَمِن بَطْنِ السَتِ المَشهُورةِ بِفَاطِمَة الثانیۂ مِن سُلالَةِ سَیِّدِنا وَ اِمَامَناالحُسَین مِن عِندَ السَّیدِ بهاؤ الدین السید اسمٰعیل ابن الامام جعفر الصادق ابن الامام محمد باقر ابن الامام علی ابن الامام زین العابدین ابن الامام علی ابن ابی طالب کرم الله وجهه

(तर्जुमा)बेशक शेख कुतुबुल मदार रजि0 की विलादत सय्यदना व इमामना हुसैन र0 की मशहूर छटी नस्ल में फातेमा सानिया के बत्न से हुयी। सैय्यद अली इब्ने सैय्यद बहाउद्दीन इब्ने सैय्यद इसमाईल इब्ने इमाम जाफर सादिक इब्ने इमाम मुहम्मद बाकर इब्ने इमाम अली इब्ने इमाम जैनुल आबिदीन इब्ने इमाम हुसैन इब्ने इमाम अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहुहू।

(4)

सन् 1379 हि0 में फर्रुख़ाबाद से एक किताब ब नाम ''तज़किरए सादात'' लिखी गयी। इस किताब में उन सभी औलिया अल्लाह के शजरात हैं जो सादात

बनी फातमा में हैं इस किताब के मुसन्निफ का नाम हकीम सय्यद आले नबी बुख़ारी फर्रुखाबादी है। इस किताब के सफहा 10 पर आप ने सादात बनी फातमा के बाज़ औलिया अल्लाह का ज़िक्र किया है जिस में सब से पहले सय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार को तहरीर किया।

सादात बनी फ़ातमा के बाज़ औलिया अल्लाह

(1)हजरत मखदूमना शाह सय्यद बदीउद्दीन अहमद जाफरी कुतुबल मदार मकनपुर नव्वरल्लाहु मर्कदहू।

(5)और इसी फेहरिस्त में पांचवें नम्बर पर आप ने लिखा हजरत मखदूमना शाह सय्यद अलाउद्दीन अली अहमद साबिर जाफ़री कलयरी।

हैरत की बात है कि इन दोनों जाफरी सय्यदों को अब्दुर रहमान चिश्ती ने औलादे बनी इस्राईल में बिला तहकीक लिख दिया है।

हकीम सय्यद आले नबी बुखारी इस किताब के सफहा 59 पर मदारे पाक और साबिर पाक र0 का शजरा नसब तहरीर फरमा रहे हैं:

सय्यदना इमाम जाफर सादिक रजि0 सय्यदना हजरत इमाम मूसा काज़िम सय्यद अब्दुर रहमान सय्यद इसमाईल।

इन्हीं की औलाद में सय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार और सय्यद साबिर कलयरी हैं।

(5)

मदार आज़म: यह किताब सन् 1333 हि0 में दिल्ली प्रिन्टिंग वर्कस देहली ब एहतमाम लाला ठाकुर दास एण्ड सन्स छपी। इस किताब के मुअल्लिफ मौलाना हकीम फरीद अहमद साहब अब्बासी नक्शबन्दी मुजद्दिदी हैं जो रियासत भीकम पुर जिला अली गढ़ में तबीब थे आप सफहा 27 पर बयाने नसब के मौजू पर तहरीर फरमाते हैं।

हज़रत शाह मदार साहब का नसब व खानदान

हज़रत शाह मदार का इस्मे गिरामी बदीउद्दीन है और लकब कुतुबल मदार। आप के मुतअल्लिक बाज़ हजरात ने कुरैशी लिखा है और बाज़ कहते हैं कि आप बनी इस्राईल में से हैं मगर यह क़ौल किसी तरह क़ाबिले तसलीम नहीं है क्योंकि सफ़ीनतुल

औलिया और साहिबे तजकिरतुल किराम लिखते हैं कि आप हाशिमी हैं सादाते बनी फातिमा से हैं और इस की ताईद साहिबजादगाने मकनपुर के यहां जो क़लमी किताबें हैं उन से होती है और ज़ाहिर है कि अपने नसब को दूसरे नसब से मिलाने की कैसी सख़्त वईद है उन हज़रात से यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि अपने नसब को दूसरे नसब से मिलायें। उन में बड़े बड़े आलिमे ज़ाहिरो बातिन हुए हैं अव्वल तो सूफियों का फ़िरका ही ऐसा है कि वह कहता है ब कौल मौलाना जामी के

बन्दा-ए-इश्क शुदी तर्के नसब कुन जामी
कि दरीं राह फलां इब्ने फलां चीज़े नीस्त

मगर यह भी खुदा की बड़ी मेहरबानी समझनी चाहिए कि कोई शख्स ख़ानदाने रिसालत से तअल्लुक निस्बती हो ऐसा शख्स इसामी और इज़ामी दोनों होता है तो उस की फज़ीलत का हर शख़्स काइल होता है। इन तमाम हालात पर नज़र करते हुए मालूम होता है कि हजरत शाह मदार साहिब को खुदा वन्द तआला ने जहाँ और मरातिब इनायत फरमाए थे एक यह भी मर्तबा था कि आप सादाते बनी फ़ातेमा से थे और मैं आप का नसब मादरी व पिदरी ब मूजिबे तहकीक़ साहिबे सफीनतुल औलिया वगैरह लिखता हूँ।

हजरत शाह मदार साहिब का नसब आबाई

सय्यद बदीउद्दीन इब्ने सय्यद अली हलबी इब्ने सय्यद बहाउद्दीन इब्ने सय्यद जहीरुददीन इब्ने सय्यद अहमद इब्ने सय्यद इसमाईल इब्ने सय्यद मुहम्मद इब्न सय्यद इसमाईल सानी इब्ने सय्यद इमाम जाफर सादिक सय्यद इमाम मुहम्मद बाकर इब्ने इमाम ज़ैनुल आबिदीन इब्ने इमाम हुसैन शहीद करबला इब्ने इमामुल मुत्तकीन अमीरुल मोमिनीन सय्यदना अली इब्ने अबी तालिब हाशिमी इब्ने अब्दुल मुत्तलिब इब्ने अम्र अल उला अल मुलक़्क़ब बिही हाशिम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ।

हजरत शाह मदार साहिब का नसब मादरी

वालिदा हजरत शाह मदार फातमा सानिया बिन्त सय्यद अब्दुल्लाह इब्ने सय्यद जाहिद इब्ने सय्यद मुहम्मद इब्ने सय्यद आबिद इब्ने सय्यद सालेह इब्ने सय्यद अबू यूसुफ इब्ने सय्यद अबुल कासिम मुहम्मद मुलक्कब बिही नफ्स ज़किया इब्ने सय्यद

अब्दुल्लाह महज़ इब्ने हसन मुसन्ना इब्ने सय्यदना इमाम हसन इब्ने सय्यदना इमाम अली मुर्तजा़ इब्ने अबी तालिब रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ।

(6)

फुसूले मसऊदया जो कि सन् 1331 हि0 में लिखी गयी इस किताब के मुसन्निफ हजरत सय्यद मसऊद अली क़लन्दर खलफुस सिदक हजरत सय्यद बासित अली क़लन्दर इलाहाबादी। यह किताब ब तसहीह सय्यद शाह मुहम्मद हबीब हैदर और ब एहतमाम मुहम्मद अब्दुल वली खलफ़ मुहम्मद मौलाना अब्दुल अली मद्रासी के लखनऊ से शाऐ हुयी। इस किताब के सफहा न0 186 पर आप रक़म तराज़ हैं:

''बादहू अज़ उलूम दीगर अज़ राहे करम बख़्शी जिबिल्ली ब मूजिब बशारते जददे बुजुर्गवारे खुद हजरत मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु वजहुहू कुतुबुल मदार अता फरमूदा ''

जब मदारे पाक 14 साल की उम्र में बारगाहे रसूल में हाजिर हुए तो सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उलूम से नवाजने के बाद उनके जददे करीम मौला अली के सुपुर्द फ़रमा दिया और

फरमाया कि तुम्हारा यह फरज़न्द तालिबे हक है इस की तरबियत करो।

ऊपर की इबारत में जददे बुजुर्गवारे खुद का लफ्ज़ यह बताता है कि मदारे पाक के मौला अली दादा हैं।

(7)

तज़किरतुल किराम फी तारीखे खुलफा-ए-अरबो इस्लाम: यह किताब बहुत मशहूर व मारूफ है इस किताब के सफहा 559 पर मुसन्निफ ने खानदाने अहले बैते मुस्तफा के मौजू पर तहरीर फरमाया:

हजरत सय्यद बदीउद्दीन शाह मदार रह0 जाए मदफन मकनपुर शरीफ साल वफात सन् 838 हि0।

खानदाने अहले बैते मुस्तफा के बाब में सरकार मदार पाक रज़ी0 को सय्यद लिख कर यह बताया कि मदारे पाक आले रसूल हैं।

अभी तक मैं उन किताबों का हवाला देता जा रहा हूँ जो खालिस मदारिया सिलसिला के मुसन्निफीन ने नहीं लिखीं बल्कि सिलसिलए आलिया चिश्तिया, सिलसिलए आलिया क़ादरिया, सिलसिलए आलिया नक्श बन्दिया और दीगर सलासिल के बुजुर्गों ने लिखी हैं।

(8)

"अनीसुल अबरार फ़ी हयाते कुत्बुलमदार"

जिसके मोअल्लिफ हज़रत मौलाना सूफी शाह मोहम्मद रियासत अली साहब राक़िम किदवई मख्दूमी क़ादरी मुजददिदी अबुलफ़ज़्ली ख़ैराबादी हैं।

इस किताब के सफ़हा 19 पर आप तहरीर फ़रमाते हैं।

आपका इस्मे गिरामी और नसब नामा नामे नामी और इस्मे गिरामी आपका हज़रत सैय्यद शाह बदीउद्दीन कुननियत अबू तुराब और मरतबए कुत्बुलमदार हासिल होने की वजह से लक़ब कुत्बुलमदार और उर्फ़ियत शाह मदार है आप सादाते हसनी और हुसैनी से है। वालिद माजिद की तरफ से आपका शजरए नसब हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ाफ़र सादिक़ रजीअल्लाहो अन्हो से इस तरह मिलता है के हज़रते सैय्यद शाह बदीउद्दीन इब्ने क़ाज़ी क़िदवतुद्दीन सैय्यद अली हलबी इब्ने सैय्यद बहाउद्दीन इब्ने सैय्यद ज़हीरुद्दीन इब्ने सैय्यद अहमद इब्ने सैय्यद इस्माईल सानी इब्ने सैय्यद मोहम्मद इब्ने सैय्यद इस्माईल इब्ने हज़रते सैय्यदना इमामे जाफ़र सादिक इब्ने हज़रत सैय्यदना इमाम

मोहम्मद बाक़र इब्ने हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबेदीन इब्ने हज़रत सैय्यदना इमामे हुसैन शाहीदे करबला इब्ने हज़रते सैय्यदेतुन्निसा फ़ात्मा ज़हरा व हज़रत सैय्यदना अमीरुलमोमिनीन अली . मुरतज़ा रज़ीअल्लाहु अन्हुम अजमईन आपकी वालिदा माजिदा का इस्मे गिरामी हज़रते हाजरा और लक़ब फ़ात्मा सानी है और वालिदा माजिदा की तरफ से आपका शजरा यूँ हैं के हज़रते सैय्यद शाह बदीउद्दीन इब्ने बीबी हाजरा बिन्ते सैय्यद अब्दुल्लाह इब्ने सैय्यद ज़ाहिद इब्ने सैय्यद मोहम्मद इब्ने सैय्यद आबिद इब्ने सैय्यद अबू सालेह इब्ने सैय्यद अबू युसूफ इब्ने सैय्यद अबुल क़ासिम इब्ने सैय्यद अब्दुल्लाह महज़ इब्ने सैय्यद हसन मुसन्ना इब्ने हज़रत सैय्यदना इमाम हसन इब्ने हज़रत सैय्येदतुननिसा फ़ात्मा ज़हरा अलैहस्सलाम व अमीरुलमोमिनीन सैय्यदना अली मुरतज़ा शेरे खुदा रज़ीअल्लाह अन्हुम अजमईन और मुसन्निफे किताब असरारे मदारी ने बहवालए साहेबे रिसालए महमूदी के आपके वलिद माजिद का नाम अबू इस्हाक साकिन मुल्के शाम लिखा है मगर इसके साथ ही ये भी गज़ब किया के हज़रते शाह मदार रज़ीअल्लाहो अन्हो के मुतअल्लिक़ ऐसा तहरीर

फ़रमाया के गोया आपका सैय्यद हसनी और हुसैनी होना तो रहा अलग आप मुसलमान ख़ानदान ही में पैदा नही हुद चुनान्चे साहेबे असरारे मदारी किताब (अस्रारे मदारी सफ़ा 3 सतर 5 में) तहरीर फ़रमाते हैं: के शाह मदार इब्ने अबू इस्हाक़ साकिन मुल्क़ेशाम नस्ल हज़रत हारुन पैग़म्बर अलैहिस्सलाम से थे और औलादे हारुन मुलक्क़ब बज़बाने इब्री कोहन यानी सय्यदो सरदार बवज्हे तवल्लियते ताबूते सकीना ख़ानदाने इस्ना अशरी बनी इसराईल में निहायत मुम्ताज़ थे।

इस तहरीर से मालूम होता है के हज़रते सैय्यद बदीउद्दीन शाह मदार रज़ीअल्लाहो अन्हो बनी इस्माईल अलैहिस्सलाम में न थे बल्के बनी इसराईल के ख़ानदान से थे और आपके वालिद अबू इस्हाक यहूदी थे (मआज़ल्लाह) मगर सच्ची बात ये है के हज़रते शाह बदीउद्दीन मदार रहमतुल्लाह अलैह बनी इसराईल अलैहिस्सलाम से थे यानी हज़रते सैय्यदना इस्माईल ज़बीहुल्लाह पैग़म्बरे ख़ुदा अलैहिस्सलाम की औलाद से है बनी इसराईल यानी हज़रते सैय्यदना याकूब (इसराईल) बिन हज़रते सैय्यदना इस्हाक बिन हज़रते सैय्यदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलै0 की

औलाद से जो बनी इसराईल (यानी याकूब की औलाद कहलाती है नही थे। हज़रते सैय्यदना हारुन अलै0 बनी इस्माईल से थे और आपके वालिद साहब का नाम अबू इस्हाक नहीं था जिसको हज़रते सैय्यदना हारुन अलै0 की औलाद और मिल्लते मूस्वी का पैरो (यानी यहूदी) ज़ाहिर किया गया है बल्कि आपके वालिद साहब का इस्मे गिरामी सैय्यद अली हलबी रह0 है जो सच्चे पक्के मुसलमान और हज़रत सैय्यदना इमाम आली मुकाम हुसैन अलैहिस्सलाम की औलाद से थे और हुसैनी सैय्यद थे मुख्तसर ये के हज़रत सै0 बदीउद्दीन शाह मदार रह0 का जो शजरए खानदानी मैने लिखा है वो सिर्फ मेरी ही राये से नहीं बल्के तमाम मोअर्रेख़ीन की इत्तेफ़ाके राय से सही बल्के बिल्कुल सही है और असरारे मदारी में जो कुछ लिखा है वो बिल्कुल ग़लत है बल्कि सरासर झूठ है लिहाज़ा ऐसी तहरीरों पर यक़ीन नहीं करना चाहियें अल्लाहुम्मा हफ़िज़ना।

(9)

मेवात की इस्लामी तारीख पर सन 1979 मे मौलाना मोहम्मद हबीबुर्रहमान ख़ान मेवाती ने मेवात अकेडमी से एक किताब 669 सफ़हात पर मुश्तमिल

बनाम ''तज़्किरए सूफ़ियाए मेवात इस्लामीये हिन्द की तारीख का भूला हुआ एक अहम बाब'' लिखी इस किताब में मेवात के उन औलियाए केराम के अज़्कार है जिन्होंने वहाँ दीन की ख़िदमत अन्जाम दी जिनमें सफ़ा 410 से लेकर सफ़ा 450 तक ख़ालिस सिलसलये आलिया मदारिया के मशायखो औलिया का ज़िक्रे जमील है।

इस किताब के सफ़ा 410 पर आप तहरीर फ़रमाते है।

सिलसिलये मदारिया सुल्तानुल्आरिफीन जिबदतुल वासिलीन ख्वाजा सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुलमदार कुददुस सिंहु

हिन्दोस्तान का कौन सा ऐसा फ़िरका है जो शाह मदार को नहीं जानता है मुसलमानों की औरतों में तो जिस महीने आपका उर्स होता है उसका नाम भी मदार के ही महीने से मशहूर है आप उस वक्त हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए जबकि यहाँ इस्लाम की रोशनी बहुत कम फैली थी एक तरफ सुल्तानुलहिन्द ख्वाजा ग़रीब नवाज़ कुददसर्सिरहू ने अपने रुहानी तसर्रुफ़ात से बहुत से दिलों को इस्लामी नूर से मुनव्वर किया दूसरी तरफ़ शाह मदार रह0 ने हर

पहलू से रह तब्के़ मे इस्लाम के नूर से फ़ैज़ाने आम फ़रमाया आपके ख़ुल्फ़ा ने इशाअते इस्लाम में पूरा पूरा हिस्सा लिया ग़रज़ शाह मदार रह0 ने इस्लाम की वो ख़िदमत की है के अब तक बराबर आपका फ़ैज़ जारी है जितनी मक़्बूलियत आपकी अवाम में थी उससे ज़्यादा ख़वास में थी। इस किताब में भी आपको सय्यद लिख कर आपकी सियादत को तस्लीम किया गया है।

(10)

खानकाह बदायूँ शरीफ से एक ऐसा तहक़ीक़ी नसब नामा लिखा गया जिस में हजरत आदम अलै0 से ले कर अब तक के औलियाए किराम और अम्बियाए किराम के शजरात लिखे गये जिस के मुरत्तिब का नाम निज़ामुल कादरी कम सुखन जो पस गवां वजीर गंज बदायूँ के रहने वाले हैं आप ने शिजरए मदारिया यूं तहरीर फरमाया:

सय्यद बदीउद्दीन मदार मकनपुर शरीफ
सय्यद अली हलबी
सय्यद बहाउद्दीन
सय्यद जहीरुद्दीन
सय्यद अहमद

सय्यद इसमाईल सानी
सय्यद मुहम्मद
सय्यद इसमाईल
इमाम जाफर
इमाम बाकर
इमाम ज़ैनुल आबिदीन
हजरत इमाम हुसैन

(11)

मिर्अते अन्साब जो मुहम्मद जियाउद्दीन अहमद अल अलवी अमरोहवी की तसनीफ है। यह किताब मतबा रहीमी मुन्शी मुहम्मद अब्दुर रहीम वाकेअ त्रपोलिया बाजार जयपुर में हाफिज अब्दुल करीम सय्यद शम्सुद्दीन के तबा हुयी इस किताब के सफहा न0 156 से ले कर सफहा 158 तक मदारुल आलमीन का जिक्रे जमील है आप मदार दो जहां के नसब के मुतअल्लिक तहरीर फरमाते हैं:

सय्यदना इमाम जाफर सादिक, सय्यद इसमाईल अव्वल, सय्यद इसमाईल सानी, सय्यद जहीरुददीन, सय्यद बहाउद्दीन, सय्यद किदवतुददीन अली हुसैन हलबी, सय्यद महमूदुद्दीन (जो मदार पाक के बड़े

भाई हैं), सय्यद बदीउद्दीन कुतुब मदार, सय्यद जाफर, सय्यद इब्राहीम, सय्यद अब्दुल्लाह, सय्यद अबू अरगून, सय्यद अबुल हसन तैफूर, सय्यद अबू तुराब फन्सूर बिरादरे हकीकी सय्यद अबू मुहम्मद अरगून।

इस शजरे में मदार पाक के भाई हजरत सय्यद महमूदुद्दीन , सय्यद जाफर, सय्यद इब्राहीम, सय्यद अब्दुल्लाह का भी जिक्र है।

(12)

हालात तारा गढ़: इस किताब में सवानेह उमरी मीरान सय्यद हुसैन ख़िन्ग सवार की लिखी गयी है इस किताब को शहाब साबरी अकबराबादी ने मुरत्तब किया है यह किताब मुस्तफाई प्रेस आगरा से तबा हुयी इस किताब के सफहा आखिर में अजमेर के मदार चिल्ले के मुतअल्लिक लिखते हैं कि अजमेर के मशारिकी पहाड़ की चोटी पर जो 700 फिट बुलन्द है उस पर हजरत सय्यद बदीउद्दीन उर्फ शाह मदार मकनपुरी ने अर्सा दराज़ तक इबादत-ए-इलाही की।

हजरत शहाब चिश्ती अकबराबादी ने भी सय्यद लिख कर मदार पाक के बारे में बता दिया कि वह आले रसूल हैं।

(13)

हजरत मौलाना मुहम्मद कायम साहब कतील दानापुरी बिहारी ने ब नुस्खा नज़्म फारसी नाम का एक रिसाला तहरीर किया जिस में औलिया किराम के मनाकिब हैं आप ने इस रिसाले के सफहा 141 पर हजरत सय्यद जमालुददीन जाने मन जन्नती की मनकबत तहरीर फरमायी और मनकबत लिखने से पहले आप के तआर्रुफ में तहरीर फरमाया:

मनाकिब कुतुबुल आलम शेखुल इसलाम जनाब हजरत सय्यद जमालुददीन जाने मन जन्नती साहब मुरीद व खलीफा कुतुबुल अकताब जनाब हतरत ख्वाजा सय्यद बदीउद्दीन मदार मकबूल परवरदिगार व ख्वाहर ज़ादए हकीकी महबूब सुबहानी गौसुल आजम शेख अब्दुल कादिर जीलानी रजि0।

इस तआर्रुफ के बाद आपने मनाकिब तहरीर फरमायीं। इस तहरीर से दो बातें समझ में आती हैं एक तो यह कि कुतुबुल मदार आले रसूल हैं दूसरी यह कि सय्यदना जमालुददीन सय्यदना गौस आजम के भांजे हैं।

(14)

रिसाला आस्ताना देहली: साहिबजादा मुसतहसिन फारूकी इस रिसाले को शाऐ करते थे।

सन् 1959 ई0 के माह जून के रिसाले में सफहा 4 पर तहरीर फरमाते हैं:

शेखुल मशाएख कुतुबुल औलिया कुतुबुल मदार हजरत शेख बदीउददीन शाह मदार

हजरत शाह मदार की ज़ात गिरामी तसव्वुफ की दुनिया में मशहूर व मारूफ है और बेशुमार मकामात पर आप के चिल्ले मौजूद हैं। आप हसनी हुसैनी सय्यद हैं । वालिद माजिद का नाम जनाब सय्यद अली हलबी इब्न सय्यद बहाउददीन उस के बाद आप ने मदार पाक का शजरा नसब तहरीर फरमाया ।

(15)

शेख़ मुहम्मद जहिंदा: आप मुरीद व खलीफा हजरत सय्यद कुतुबुल अकताब हजरत सय्यद बदीउददीन कुतुबुल मदार के थे जहींदा इस वजह से मशहूर हए कि हालते वज्द में कूदा करते थे। बदायूँ में मुत्तसिल तालाब चन्दूखर में एक मकबरा बतौर गुम्बद के बना है उस में आप का मज़ार है।

इस किताब में भी कुतुबुल मदार को सय्यद लिखा गया है ।

(16)

गौस पाक की औलाद अमजाद का बारगाह सय्यद बदीउददीन कुतुबुल मदार में हाज़री और एक कसीदा जिस को सन् 1120 हि0 में पेश किया गया ।

हजरत अब्दुर्रज़्ज़ाक क़ादरी बांसवी रज़ि0 जो सरकार गौस पाक की नस्ल से हैं खुद आले रसूल हैं। दिलबन्द गौस आज़म हैं । उन्होने बारगाहे मदारुल आलमीन में हाजरी का शर्फ हासिल किया और एक कसीदा लिखा जिस को हजरत मौलाना सय्यद मुख्तार अली वकारी मदारी ने अपनी किताब फजाएल अहले बैत अतहार व इरफान कुतुबुल मदार में भी नकल किया है ।

ऐ जिगर गोशे मुहम्मद ऐ हबीबे किर दिगार
ऐ गुले गुलज़ार हैदर चूँ अमीरे शह सवार
ऐ चिरागे़ दीने अहमद हम शबिस्ताने बहार
आशिके मक़सूदे मुतलक मेहरमे परवरदिगार

कुन करम बहरे ख़ुदा सय्यद बदीउददीं मदार
कुर्रतुल ऐने मुहम्मद ऐ जिगर गोशे अली
यक नज़र फरमा बराये मुस्तफा खैरुन नबी
रौनके़ बागे विलायत मेहरमे राज़े ख़फी
ऐ अमीरे ताजे अनवर फैज़ बख्शे मअनवी

कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
वाकिफ़े इल्मे लदुन्नी ऐ शहे कुतुबुल मदार
महरमे सिर्रे हकीकत बादशाहे नामदार
गौहरे मकसूदे आलम मज़हरे परवरदिगार
नाज़िमे दीने मुहम्मद आज़में सद इफतिखार
कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
ऐ सरवरे जुमला आलम हामीये ताजे विला
मुक्तदाए अहले इरफां वाकिफे राज़े खुदा
अज मकनपुर ता खुरासां फैज़ बख्श हर गदा
साकिनाने आलमीं करदन्द तू बर जाँ फिदा
कुन करम बहर खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
हाज़िरे अज़ रू ए इसयां ऐ शहे आली उमम
लुत्फ कुन बर ई गदा ए पेश खूदारम जुरम
चूँ ने आयम कोई नाज़ां शूम हर तस्तमम
मी कुनम फरयाद हर दम कुन बदीउददीं करम
कुन करम बहर खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
महरम ए हर ना तवांने दर्द मन्दान ए तूई
वालीए हर बेकसाने दस्त दरमाने तूई
शाफ़ए हर आसियां रा फैज़ शाहाने तूई
ताज बख़्शे हर गदा रा गंज सुल्ताने तूई
कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
मन चे गोयम दर हयाते ऐ शहे रोशन ज़मीर

हादीए हर गुमरहांओ आसियां रा दस्तगीर
आजेज़म दरमान्दा उफ़्तादा आम जाने असीर
बह नगर्द हर हाल आसी इल्तिजा दारद फकीर
कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
मन न गोयम वस्फ तू सद आफरीं सद आफरीं
फैज़े तू जारी व सारी बर सरे दुनिया व दीं
मअदिने जूदो इनायत साकिन ए अर्शे बरीं
समदियत अज़ मरतबत हासिल शुदा नूरे यकीं
कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
बर हमा आलम शहा तू फैज़ बारे खासो आम
यक नज़र फरमा बराए मुस्तफा खैरुल अनाम
अज़ अज़ल हसतम गुलामी कू ए तू दारम मकाम
आदम ए रू ए ख़जालत दस्तगीरी कुन मदाम
कुन करम बहर खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
ना तवानम बे करारम खाकसारम चश्म ज़ार
पर गुनाहम शर्मसारम न रदाएम दिल फिगार
दर्द मन्दम मुतमन्दम जान सूज़ अश्कबार
खस्ता हालम दाना दारम अज़ फुर्कत अश्कबार
कुन करम बहरे खुदा सय्यद बदीउददीं मदार
आसी अब्दुर्रज़्ज़ाक कादरिया मा नसब
दर्द कुन अज़ लुत्फ ए रहमत ई हमा रंज व गज़ब
आमदा दर्गाहे शाहाना हमा इज्जा़ अदब

मा वराएम जां खराबम मन नमी दानम सबब

कुन करम बहरे ख़ुदा सय्यद बदीउद्दीं मदार

इस मनकबत में सरकार के सय्यद होने के साथ साथ और भी चीज़ें देखी जा सकती हैं । बहुत सी किताबें ऐसी हैं जिनमें सरकार मदारे पाक को पहले सय्यद लिखा था लेकिन जब दूसरे एडीशन शाऐ हुए तो उस में सय्यद की जगह शेख या शाह का लफ्ज़ दिखायी दिया । किताब बहरे ज़क्खार के सफहा 977 पर मुसन्निफ ने तहरीर किया है कि:

शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहल्वी और अख़बारुल अखयार कुतुबुल मदार रा सय्यद तविश्ता ।

शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहल्वी ने कुतुबुल मदार को अख़बारुल अखयार में सय्यद लिखा है यानी पहले के एडीशन में सय्यद लिखा गया होगा फिर शेख वगैरह लिख दिया गया । एक साहब ने अखबारुल अखयार का तर्जुमा किया और मकाम ए समदिय्यत का मतलब यह लिखा कि कुतुबुल मदार समन्दर में रहा करते थे । इस तरह की बहुत सी तब्दीलियां इबारात में आयी हैं ।

सरकार मदारुल आलमीन को इन मजकूरह किताबों के अलावा भी बहुत सी किताबों में सय्यद लिखा गया है ।

अब हर किताब की ज़रूरत नहीं । ऐसी तहरीर की गयी साबका कुतुब से सरकार की सियादत साबित हो चुकी है मगर फिर भी उन किताबों का नाम लिख दिया जाता है जिन में आप को सय्यद लिखा गया है :

1- नुज़हतुल खवातिर अज़ मौलाना अब्दुल हयी वालिद अबुल हसन अली नदवी

2- मिश्कात मदार कलमी , मुहम्मद रज़ा उर्फ राजे मियाँ

3- तजकिरतुल मुत्तकीन, मौलाना अमीर हसन मदारी रह0

4- ज़ौक ए नात, अल्लामा हसन रज़ा खॉ बरेल्वी

5- गुलिस्तान ए मदार

6- रिसालतुत तौहीद, अबुल हसन अली नदवी

7- तज़किरतुल आरिफीन, सय्यद वली हसन

इन के अलावा बहुत सी किताबें जो उस दौर में लिखी गयीं आप को सादात बनी फातमा में लिखा गया है ।

ज़ेल में अंग्रेज़ी ज़बान की वह किताबें जिन में सरकार को सय्यद लिखा गया :

1. Religion and Politics in India during

the thirteen century.

2. Der Islam in indischen subcontinent.

3. Sufis and Sufism in the territory of Kalpi. वगैरह ।

अलहमदुलिल्लाह इन कुतुब से साबित हो गया कि कुतुबुल मदार हसनी हुसैनी हैं रही बात मुख्तलिफ शजरों में कुछ नामों में इख्तिलाफ की तो घर वाले अपने घर का हाल दूसरों से कहीं ज़्यादा जानतें हैं । सादात मकनपुर शरीफ जो शजरा लिखते हैं वह सही है।

आखिर में उन सभी हजरात का शुक्रया अदा करते हुए जिन्होने मेरे इस काम में मुझे किताबें फराहम कर के मेरी मुआवनत की जैसे पीर ए तरीकत सय्यद बखशिश अली वकारी मदारी दीवान आस्ताना आलिया मदारया इब्न मुहक्किक ए मदारयत हजरत मौलाना सय्यद मुख्तार अली वकारी मदारी रह0 व शेख तरीकत हजरत सय्यद असरुल इसलाम जाफरी मदारी शेख तरीकत हजरत नूरुल ऐन सच्चे मियाँ मदारी शेख तरीकत हजरत वकार अहमद वकारी मदारी शेख तरीकत हजरत अज़हर अली वकारी मदारी शेख तरीकत हजरत सय्यद इज़दार हुसैन जाफरी मदारी में अपनी बात खत्म करता हूं और उन

सभी बुजुर्गो जिन का रूहानी फैज़ मुझे हासिल होता रहा जैसे शेखुल हिन्द हजरत सय्यद जुल फुकार अली कमर वकारी मदारी, शेखुल मशाएख हजरत सय्यद मनज़र अली वकारी मदारी, शेखुल मशाएख हजरत सय्यद मुख्तार अली वकारी मदारी, शेखुल मशाएख हजरत सय्यद ज़हीरुल मुनइम उर्फ बब्बन मियाँ मदारी, हजरत सय्यद मुख्तार अहमद मदारी वगैरहुम के दरे अज़मत सर तसलीम व अदब खम करते हैं ।

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शमा की सूरत हो खुदा या मेरी
बारगाह सय्यद बदीउद्दीन अहमद
कुतुबुल मदार मदारुल आलमीन रह0 में
ग़लामाना खिराज ए अकीदत

ज़िक्र मदारुल आलमीन

नतीजा फिक्र:शेखुल तरीकत हजरत अल्लामा महज़र मकनपुरी मद् ज़िल्लुहू आली
सज्जादा ए आज़म खानकाह आलिया मदारया,
मकनपुर शरीफ

है हमारी ज़िन्दगी जिक्रे मदारुल आलमीं
हम न छोड़ेंगे कभी जिक्रे मदारुल आलमीं
क्यों हिरासां हो रहा है जुल्मतों से मेरे दिल
तुझ को देगा रोश्नी जिक्रे मदारुल आलमीं
तज़किरा गैरों का वजहे सोरिश व हंगामा है
रूह ए अमन व आश्ती जिक्रे मदारुल आलमीं
इस घड़ी गोशे समाअत को अदब सिखलाइए
कर रहा हो जब कोई जिक्रे मदारुल आलमीं
रोकना जो चाहते हैं वह मुखालिफ देख लें
हो रहा है और भी जिक्रे मदारुल आलमीं
काश हो महज़र यही बस ज़िन्दगी का मश्गला
ज़िक्र ए हक, ज़िक्र ए नबी, जिक्रे मदारुल
आलमीं

नोटः
इन सभी मनाज़िर को देखने के लिये नेट पर सर्च करें।
www.youtube/syedshajerali या
youtube पर लिखें KARAMATE MADAR

Printed By: Insha Printers, Kanpur

दम मदार बेड़ा पार

मज़ारे मुक़द्दस हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद
कुत्बुल मदार ज़िन्दाशाह मदार रज़ी.

E-mail : dummadar@yahoo.com

syedshajeralifacebook • www.youtube/syedshajarali
www.zindashahmadar.org • www.qutbulmadar.org
www.shahmadar.blogspot.com • syedshajermadari@gail.com

SMS GROUP - JOIN (Space) ALMADAR - Sent : To 567678

Almadar Offset (Insha Printers) Kanpur - 9616584408